

- देशितो राजा ब्राह्मणान् वशवर्तिनः प्रास्थापयत्.
c. सम् 1) docere, edocere. N. 14. 26. 2) mandare, jubere,
c. acc. pers. N. 16. 2. IN. 5. 31. 3) dare. BHATT. 6. 141.:
भ्रात्रि राज्यं सन्दिश्य.
2. दिष् f. (r. दिष्) plaga, regio coeli. H. 1. 18.
दिष्ट n. (r. दिष् s. त) fatum. MAH. 1. 3584.
दिष्टि f. (r. दिष् s. ति) voluptas, felicitas.
दिष्ट्या (instrum. praec.) exclamatio gaudii, macte! proh fe-
licitatem! N. 13. 72. 25. 11. SA. 6. 23.
- दिह् 2. P. A. oblinere, polluere. N. 24. 46.: मलदिग्धा-
ङ्गोम्; RAGH. 16. 15.: अस्मदिग्ध. Ungere. BH. 17.
54.: अदिहंश् चन्दनैः शुभ्रैः. (Lat. pol-lingo, mutato d
in l, li-no, li-tum, abjecta gutturali; fortasse tingo mutata
mediâ in tenuem, sicut e. c. sanscrit. दृह् et तृह् idem
valent; germ. vet. zehôm tingo nititur formâ caus. देह-
यामि; ita lith. daz'au intingo, coloro. (*))
- c. प्र ३q. simpl. BH. 2. 5.: रुधिरप्रदिग्ध.
- c. सम्, सन्दिग्ध 1) pollutus. UR. 37. 6. 2) oppressus,
suffocatus, de voce. N. 12. 100.: वाष्पसन्दिग्धया गिरा;
22. 24.: वाष्पसन्दिग्धया वाचा; MAH. 1. 6565.: सन्दि-
ग्धाक्षरया गिरा. 3) dubius, incertus (cf. सन्देह). HIT.
116. 1.: सन्धिम् इच्छेत् समेना 'पि सन्दिग्धो वि-
ज्ञयो युधि. — सन्देहयामि (ut mihi videtur, Denom.
vocis सन्देह dubium) dubium, incertum reddere, con-
fundere. MAH. 1. 5183.: तन् मे सन्देहयद् दिशः —
ATM. dubitare. R. Schl. II. 65. 15.
- दी 4. A. perire, evanescere. दीन (gr. 607.) consternatus,
perturbatus, miser, moestus, tristis. SU. 3. 6. N. 12. 100.
(Cf. 2. दा, दो, दु.)
- दीन् 1. A. 1) sacrificare. 2) consecrare, initiare, caer-
monias sacrificii praevas facere. BHATT. 20. 14.:
दीक्षस्व तुरगाधरे; RAGH. 4. 5.: सांराज्यदीक्षित; R. Schl.
I. 42. 24.: राजानन् दीक्षितम्; MAN. 2. 128. 4. 130. 210.
C. dat. rei ad quam alqs consecratur, RAGH. 8. 74.: सव-

(*) Cf. Pott I. p. 282. Ag. Benary Römische Lautlehre
p. 200.

- नाय दीक्षितः. — Caus. MAH. 2. 12417.: तन् दीक्षया-
ञ्चक्रिरे विप्रा राजसूयाय.
- दीक्षा f. (r. दीक्ष s. आ) sacrificium; consecratio, sacrificii
caerimonia initialis. RAGH. 3. 33. 65. SU. 1. 7.
- दीक्षापय (Denom. a praec.) consecrare. MAH. 2. 1224.:
दीक्षापय गोविन्द त्वम् आत्मानम्.
- दीधिति f. (r. दीधी correpto ई, s. ति) luminis radius.
RAGH. 3. 22. 8. 30.
- दीधी 2. A. (forma reduplicata) splendere, lucere, in dial.
Ved. (v. Westerg.). RIG-V.: उषसो दीध्यानाः. —
Etiam दीदी. Ros. RIG-V. Spec. p. 18. 8.: क्षप उस्त्रश्च
दीदिहि (pro दिदीहि) «noctu luceque flagra». (V.
praec. et दिव्, दीप्.)
- दीन v. दी.
- दीनक (a praec. s. क vel अक) miserabilis.
- दीनकम् Adv. (a praec. signo accus.) miserabiliter. A. 10.
64.
- दीनमनस् (BAH. e दीन et मनस् n. mens) tristem, affli-
ctam mentem habens. H. 1. 49.
- दीनमानस (BAH. e दीन et मानस n. mens) i. q. praec.
H. 1. 49.
- दीप् 4. A. fulgere, splendere, flagrare. HIT. 8. 9. 10.: यथो
'दयगिरौ द्रव्यं सन्निकर्षेण दीप्यते। तथा सत्सन्नि-
धानेन हीनवर्णी ऽपि दीप्यते; RAGH. 5. 47.: पुनर
दिदीपे मददुर्दिनश्रीः (नागस्य); MAN. 2. 232.: दीप्य-
मानः स्ववपुषा. — दीप्सं flagrans. BH. 11. 17.: दी-
प्तानलार्कयुति; N. 11. 36.; DR. 2. 10. — Caus. 1) col-
lustrare. GITA-GOV. 7. 1.: वृन्दावनान्तरम् अदीप-
यद् इन्दुः. 2) accendere. MAH. 1. 5828.: त्रतुगृहद्वारन्
दीपयामास पाण्डवः. — Intens. N. 3. 12.: देदीप्यमा-
नाम् वपुषा; DR. 2. 1.: देदीप्यमाना 'ग्निशिखे' व न-
क्तम्. (Cf. तप्, दिव्, दीधी; lith. z'ibbu splendo; gr.
λάμπω (α = ह् i. e. a + i; abjecto i; mutato d in l;
lat. limpidus.)
- c. आ Caus. incendere, inflammare. MAH. 1. 5822.: आयु-
धागरम् आदीप्य; R. Schl. I. 65. 8.: त्रैलोक्यम् आदी-
पितम् इवा भवत्; — आदीप्स pro आदीपित. MAH.